**संघादण-परिसादणकदीए एगजीवं पडुच्च जहण्णेण तिण्णिसमया उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। आहारतिगस्स णाणाजीवं पडुच्च ओघं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अन्तोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। तेजा-कम्मइयदोण्णिपदा ओघं।**

**सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदाणं मणपज्जवभंगो। णवरि आहारतिगस्स संजदभंगो। परिहारसुद्धिसंजदेसु सव्वपदाणं णत्थि अंतरं। सुहुमसांपराइयाणं सगपदाणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। संजदासंजदाणं मणपज्जवभंगो। असंजदाणमोरालिय-वेउव्वियतिण्णिपदाणं तेजा-कम्मइयएगपदमोघं।**

**चक्खुदंसणीणं तसपज्जत्तभंगो। णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी णत्थि। अचक्खुदंसणीसु ओघं। णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी णत्थि। ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो। केवलदंसणी केवलणाणिभंगो।**

**किण्ण-णील-काउलेस्सिएसु ओरालियसंघादणकदीए ओरालिय-वेउव्वियपरिसादणकदीए तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदीए णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। ओरालियसंघादण-परिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च**

........................

कृतिका अंतर एक जीवकी अपेक्षा जघन्यसे तीन समय और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्वकोटि काल प्रमाण होता है। आहारकशरीरके तीनों पदोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ओघके समान है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्यसे अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण है। तैजस और कार्मणशरीरके दोनों पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है।

सामायिक-छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंकी प्ररूपणा मन:पर्ययज्ञानियोके समान है। विशेष इतना है कि आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा संयतोके समान है।

परिहारशुद्धिसंयतोमें सब पदोंका अंतर नहीं होता। सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोमें अपने पदोंका अंतर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे छह मास प्रमाण होता है। एक जीवकी अपेक्षा उनका अंतर नहीं होता। संयतासंयतोंकी प्ररूपणा मन:पर्ययज्ञानियोके समान है। असंयत जीवोंमें औदारिक और वैक्रियिकशरीरके तीनों पद तथा तैजस व कार्मणशरीरकी एक पदकी प्ररूपणा ओघके समान है।

चक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा त्रस पर्याप्तोके समान है। विशेष इतना है कि उनमें तैजस व कार्मणशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती। अचक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा ओघके समान है। विशेष इतना है कि उनमें तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती। अवधिदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोके समान है। केवलदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा केवलज्ञानियोके समान है।

कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातन-कृतिका तथा औदारिक व वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृतिका तथा तैजस कार्मण-शरीरोंकी संघातन-परिशातनकृतिका नाना व एक जीवकी अपेक्षा अंतर नहीं होता। औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा नाना

**ओघं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीस-सत्तारस-सत्तसागरोवमाणि अंतोमुहुत्तं तिसमयाहियाणि। वेउव्वियसंघादणकदीए णाणेगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। संघादण-परिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च ओघं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं तिसमयाहियं।**

**तेउ-पम्मलेस्सासु ओरालियसंघादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण मासपुधत्तं। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। ओरालिय-वेउव्वियपरिसादणकदीए तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदीए णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। ओरालियसंघादण-परिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च ओघं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण दिवड्ढपलिदोवमं सादिरेयबेसागरोवमाणि, उक्कस्सेण बे-अट्ठारससागरोवमाणि सादिरेयाणि अद्धसागरोवमेण तिसमयाहिय-अंतोमुहुत्तेण च। वेउव्वियसंघादणकदीए णाणेगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। संघादण-परिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च ओघं। एगजीवं पडुच्च**

........................

जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है। एक जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे तीन समय व अन्तर्मुहूर्तसे अधिक क्रमशः तेतीस, सत्तरह और सात सागरोपम काल प्रमाण है। वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नाना व एक जीवकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है। एक जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे तीन समय अधिक अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण होता है।

तेज व पद्म लेश्यावाले जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे मासपृथक्त्व काल प्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा उसक अन्तर नहीं होता। औदारिक व वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति तथा तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिका नाना और एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता। औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है। एक जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर जघन्यसे क्रमशः डेढ पल्योपम व कुछ अधिक दो सागरोपम तथा उत्कृष्टसे अर्ध सागरोपम व तीन समय सहित अन्तर्मुहूर्तसे अधिक दो और अठारह सागरोपम काल प्रमाण होता है। वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नाना व एक जीवकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण होता है। वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्यसे

जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। आहारतिगस्स णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वासपुधत्तं। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं।

सुक्कलेस्सिएसु ओरालियसंघादण-परिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण तिण्णि समया, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि तिसमयाहियअंतोमुहुत्तेण सादिरेयाणि। ओरालियसंघादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वासपुधत्तं। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। ओरालिय-वेउव्वियपरिसादणकदीए तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदीए तेउभंगो। वेउव्विय-संघादण-संघादणपरिसादणकदीए काउलेस्सियभंगो। आहारतिण्णिपदाणं मणजोगिभंगो।

भवसिद्धिएसु ओघं। अभवसिद्धिएसु सगपदा ओघं।

सम्मादिट्ठीणमाभिणिबोहियभंगो। णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी ओघं। खइयसम्मादिट्ठीसु ओरालियसंघादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण

......................

एक समय और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण होता है। आहारकशरीरके तीनों पदोंका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे वर्षपृथक्त्व काल प्रमाण होता है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता।

शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिका नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता। एक जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर जघन्यसे तीन समय और उत्कृष्टसे तीन समय और अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम काल प्रमाण होता है। औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अंतर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और वर्षपृथक्त्व काल प्रमाण होता है। एक जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर नहीं होता। औदारिक और वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति तथा तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा तेजलेश्यावाले जीवोंके समान है। वैक्रियिकशरीरकी संघातन व संघातन -परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा कापोतलेश्यावाले जीवोंके समान है। आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा मनयोगियोके समान है।

भव्यसिद्धिक जीवोंमें अपने पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है। अभव्यसिद्धिक जीवोंमें अपने पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है।

सम्यग्दृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानियोके समान है। विशेष इतना है कि तैजस व कार्मणशरीरकी परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा ओघके समान है।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे वर्षपृथक्त्व काल प्रमाण होता है। एक जीवकी

**वासपुधत्तं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमं सादिरेयं, उक्कस्सेण पलिदोवमपुधत्तं । ओरालिय-वेउव्वियपरिसादणकदीए आहारतिगस्स णाणाजीवं पडुच्च ओघं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । ओरालियसंघादणपरिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च ओघं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि । वेउव्वियसंघादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च ओघं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि । संघादण-परिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च ओघं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडितिभागेण सादिरेयाणि । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी ओघं ।**

**वेदगसम्मादिट्ठीसु ओरालियसंघादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण मासपुधत्तं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमं सादिरेयं, उक्कस्सेण ओघं । दोण्णं परिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च ओघं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण**

........................

अपेक्षा उसका अन्तर जघन्यसे कुछ अधिक पल्योपम और उत्कृष्टसे पल्योपमपृथक्त्व काल प्रमाण है । औदारिक व वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृतिका तथा आहारकशरीरके तीनों पदोंके अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है । एक जीवकी अपेक्षा उनका अंतर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्टसे कुछ अधिक तेतीस सागरोपम काल प्रमाण होता है । औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अंतरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है । एक जीवकी अपेक्षा उसका अंतर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटिसे अधिक तेतीस सागरोपम काल प्रमाण होता है । वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृतिका नाना जीवोंकी अपेक्षा अंतर ओघके समान है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्यसे अन्तर एक समय है और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटिसे अधिक तेतीस सागरोपम है । संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है । एक जीवकी अपेक्षा उसका अंतर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे पूर्वकोटिके तृतीय भागसे अधिक तीन पल्योपम काल प्रमाण होता है । तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा ओघके समान है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अंतर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे मासपृथक्त्व काल प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर जघन्यसे कुछ अधिक पल्योपम काल प्रमाण होता है । उत्कृष्ट अन्तरकी प्ररूपणा ओघके समान है । दोनों शरीरोंकी परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त

**छावट्ठिसागरोवमाणि वेसूणाणि। एवं आहारतिगस्स वि। णवरि णाणेगजीवं पडुच्च ओघं। ओरालिय-संघादण-परिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च ओघं। (एगजीवं पडुच्च) जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि तिसमयाहियअंतोमुहुत्तेण सादिरेयाणि। वेउव्वियसंघादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च ओघं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि समयाहियपुव्वकोडीए सादिरेयाणि। संघादण-परिसादणकदी णाणाजीवं पडुच्च ओघं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि वेसूणाणि। तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकदीए णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं।**

**उवसमसम्माइट्ठीसु ओरालिय-वेउव्वियपरिसादणकदीए ओरालिय-तेजा-कम्मइय-संघादण-परिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ[1], उक्कस्सेण सत्त रादिंदियाणि। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। वेउव्वियसंघादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सत्त रादिंदियाणि। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ,**

......................

और उत्कृष्टसे कुछ कम छ्यासठ सागरोपम काल प्रमाण होता है। इसी प्रकार आहारकशरीरके तीनों पदोंके अन्तरको कहना चाहिये। विशेष इतना है कि नाना जीवोंकी अपेक्षा उनका अंतर ओघके समान है। औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अंतरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है। (एक जीवकी अपेक्षा) अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे तीन समय व अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम काल प्रमाण होता है। वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे एक समय व पूर्वकोटिसे अधिक तेतीस सागरोपम काल प्रमाण होता है। वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है। एक जीवकी अपेक्षा अंतर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे कुछ कम तीन पल्योपम काल प्रमाण होता है। तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिका नाना व एक जीवकी अपेक्षा अंतर नही होता।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिक और वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति तथा औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे सात रात्रि-दिन प्रमाण होता है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता। वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे सात रात्रि-दिन प्रमाण होता है। एक जीवकी अपेक्षा अंतर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण होता है।

..............................

१ अप्रतौ 'समओ एगो' इति पाठः।

**उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। संघादण-परिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सत्त रादिंदियाणि। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अधवा, उक्कस्सेण एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं।**

**सम्मामिच्छादिट्ठीसु अप्पप्पणो पदाणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं।**

**सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियसंघादणकदीए दोण्हं परिसादणकदीए तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। ओरालियसंघादण-परिसादणकदीए वेउव्वियसंघादण-संघादणपरिसादणकदीणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं।**

**मिच्छादिट्ठीसु ओरालिय-वेउव्वियतिण्णिपदा तेजा-कम्मइयएगपदो च ओघं।**

.......................

वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे सात रात्रि-दिन प्रमाण होता है। एक जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण होता है। अथवा, एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्टसे अंतर नहीं होता।

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें अपने अपने पदोंका अंतर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग काल प्रमाण होता है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता।

सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति, दोनों अर्थात् औदारिक व वैक्रियिकशरीरोंकी परिशातनकृति तथा तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग काल प्रमाण होता है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता। औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृति तथा वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतीका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग काल प्रमाण होता है। एक जीवकी अपेक्षा उनका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण होता है।

मिथ्यादृष्टियोंमें औदारिक और वैक्रियिकशरीरके तीनों पदों तथा तैजस व कार्मणशरीरके एक पदके अन्तरकी प्ररूपणा ओघके समान है।

**सण्णीसु ओरालियसंघादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चवुवीसमुहुत्ता। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि समयाहियपुव्वकोडीए सादिरेयाणि। ओरालिय-वेउव्वियपरिसादणकदीए पुरिसवेदभंगो। ओरालियसंघादण-परिसादणकदीए पुरिसवेदभंगो। वेउव्वियसंघादणकदीए तसकाइयभंगो। वेउव्वियसंघादणपरिसादणकदीए पुरिसवेदभंगो। आहारतिण्णिपदाणं पुरिसवेदभंगो। तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी ओघं।**

**असण्णीसु ओरालियसंघादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं चदुसमऊणं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी समयाहिया। ओरालियवेउव्वियपरिसादणकदीए वेउव्वियसंघादण-संघादण-परिसादणकदीणं तिरिक्खभंगो। ओरालिय संघादण-परिसादणकदीए पचिंदियतिरिक्खभंगो। तेजा-कम्माइयसंघादण-परिसादणकदी ओघं।**

**आहारएसु ओरालिय-संघादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च ओघं। एगजीवं पडुच्च जह-**

........................

संज्ञी जीवोमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे चौवीस मुहूर्त प्रमाण होता है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर जघन्यसे तीन समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कृष्टसे एक समय व पूर्वकोटिसे अधिक तेतीस सागरोपम काल प्रमाण होता है। औदारिक और वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा पुरुषवेदियोंके समान है। औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा पुरुषवेदियोके समान है। वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृतिके अंतरकी प्ररूपणा त्रसकायिकोके समान है। वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा पुरुषवेदियोके समान है। आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा पुरुषवेदियोके समान है। तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिकी प्ररूपणा ओघके समान है।

असंज्ञी जीवोमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नही होता। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर जघन्यसे चार समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कृष्टसे समय अधिक एक पूर्वकोटि काल प्रमाण होता है । औदारिक और वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृतिका तथा वैक्रियिकशरीरकी संघातन व संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा तिर्यंचोके समान है। औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोके समान है। तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिकी प्ररूपणा ओघके समान है।

आहारकोमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर जघन्यसे चार समय कम क्षुद्रभव-

**ण्णेण खुद्दाभवग्गहणं चदुसमऊणं, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि समऊणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि। ओरालियपरिसादणकदी वेउव्वियतिण्णिपदा ओघं। णवरि जम्हि अणंतो कालो तम्हि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ। ओरालियसंघादणपरिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च ओघं। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तेण सादिरेयाणि। आहारतिगमोघं। णवरि उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जओ ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ। तेजा-कम्मइयएगपदमोघं।**

**अणाहारएसु ओरालिय-तेजा-कम्मइयपरिसादणकदीए णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण उक्कस्सेण णत्थि अन्तरं। तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदीए णाणेगजीवं णत्थि अन्तरं। एवमंतराणुगमो समत्तो।**

**भावाणुगमेण सव्वपदाणं सव्वमग्गणासु ओदइओ भावो। कुदो ? सरीर-णामकम्मोदएण सव्वपदसमुप्पत्तीदो। णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी खइया। कुदो ?**

........................

ग्रहण और उत्कृष्टसे एक समय कम पूर्वकोटिसे अधिक तेतीस सागरोपम काल प्रमाण होता है। औदारिकशरीरकी परिशातनकृतिके और वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा औघके समान है। विशेष इतना है कि जहांपर अनन्त काल कहा है वहांपर अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी प्रमाण काल कहना चाहिये। औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम काल प्रमाण होता है। आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है। विशेष इतना है कि उनका अंतर उत्कृष्टसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल प्रमाण होता है। तैजस व कार्मणशरीरके एक पदकी प्ररूपणा ओघके समान है।

अनाहारकोंमें औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृतिका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे छह मास प्रमाण होता है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर जघन्य व उत्कृष्टसे नहीं होता। तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिका नाना व एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता। इस प्रकार अन्तरानुगम समाप्त हुआ।

भावानुगमकी अपेक्षा सब पदोंके सब मार्गणाओंमें औदयिक भाव होता है, क्योंकि, सब पद शरीरनामकर्मके उदयसे उत्पन्न होते हैं। विशेष इतना है कि तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति क्षायिक है, क्योंकि, अयोगकेवली जिनमें शरीरनाम -

**अजोगिम्हि सरीरणामोदयक्खएण तेसिं परिसदणुवलंभादो। एवं भावाणुगमो समत्तो।**

**अप्पाबहुआणुगमो सत्थाण-परत्थाणप्पाबहुगभेदेण दुविहो। तत्थ सत्थाणप्पाबहुगाणुगमेण दुविहो णिद्देसा ओघेणादेसेण य। तत्थोघेण सव्वत्थोवा ओरालियपरिसादणकदी। कुदो? असंखेज्जसेडिमेत्तादो। संघादणकदी अणंतगुणा, सव्वजीवरासीए असंखेज्जदिभागत्तादो। संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, सव्वजीवरासीए असंखेज्जाभागत्तादो[1]।**

**सव्वत्थोवा वेउव्वियपरिसादणकदी, असंखेज्जघणंगुलमेत्तसेडिपरिमाणादो। संघादणकदी असंखेज्जगुणा, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तसेडिपमाणत्तादो। संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, सगुवक्कमणकालसंचिदासेसरासिग्गहणादो।**

**सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी, एगसमयसंचयित्तादो। परिसादणकदी संखेज्जगुणा, अंतोमुहुत्तसंचिदत्तादो। संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया मूलसरीरमपविस्सिय कालं करेमाणजीवमेत्तेण।**

**सव्वत्थोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी, संखेज्जअजोगिजीवग्गहणादो। संघादण-**

........................

कर्मके उदयक्षयसे उन दोनों शरीरोंकी क्षीणता पायी जाती है। इस प्रकार भावानुगम समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्वानुगम स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके भेदसे दो प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थान अलपबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है - ओघनिर्देश और आदेश-निर्देश। इनमेंसे ओघकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे असंख्यात जगश्रेणी मात्र है। इनसे उक्त शरीरकी संघातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं, क्योंकि, वे सब जीवराशिके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। उनसे उक्त शरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे सब जीवराशिके बहुभाग प्रमाण हैं।

वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे असंख्यात घनांगुल मात्र जगश्रेणियोके बराबर हैं। इनसे उक्त शरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र जगश्रेणियोके बराबर हैं। इनसे उक्त शरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, इनमें अपने उपक्रमणकालमें संचित समस्त राशिका ग्रहण है।

आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे एक समयमें संचित हैं। इनसे उक्त शरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे अन्तर्मुहूर्तमें संचित हैं। इनसे उक्त शरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव मूलशरीरमें प्रवेश न कर मृत्युको प्राप्त होनेवाले जीवों मात्रसे विशेष अधिक हैं।

तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, इनमें केवल संख्यात अयोगिकेवली जीवोंका ग्रहण है। इनसे उक्त दोनों शरीरोंकी संघातन-

........................

१ प्रतिषु 'असंखेज्जभागत्तादो' इति पाठः।

**परिसादणकदी अणंतगुणा, अणंतरासिग्गहणादो।**

**आदेसेण णिरयगदीए णेरइएसु सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी, णेरइयदव्वं सगुवक्कमणकालेणोवट्टिदेगखंडपमाणत्तादो। संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, णेरइयाणमसंखेज्जभागपमाणत्तादो। तेजा-कम्मइयकदीए[1] अप्पाबहुगं णत्थि, एगपदत्तादो। एवं सव्वणेरइय-सव्वदेवाणं च वत्तव्वं। णवरि सव्वट्ठे सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी, संखेज्जजीवाणं चेव तत्थुवक्कम्मणुवलंभादो। संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा, संखेज्जरासित्तादो।**

**तिरिक्खेसु ओरालियतिण्णिपदा ओघं, समाणकालत्तादो। सव्वत्थोवा वेउव्विय-संघादणकदी, सगोघरासिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण सगुवक्कमणकालेण खंडिदेग-खंडपमाणत्तादो। परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, अन्तोमुहुत्तसंचिदत्तादो। संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया मूलसरीरमपविसिय कयकालजीवेहि। तेजा-कम्मइयकदीए[1] णत्थि अप्पाबहुगं, एगपदत्तादो।**

.....................

परिशातनकृति युक्त जीव अनंतगुणे हैं, क्योंकि, इनमें अनन्त राशिका ग्रहण है।

आदेशकी अपेक्षा नरकगतिमें नारकियोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे नारक द्रव्यको अपने उपक्रमणकालसे अपवर्तित करने पर प्राप्त हुए एक खण्डके बराबर हैं। इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे नारकियोंके असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं।

तैजस व कार्मणशरीरकी अपेक्षा अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, उनका यहां संघातन-परिशातनकृति रूप एक ही पद है।

इसी प्रकार सब नारकी और सब देवोंके भी कहना चाहिये। विशेष इतना है कि सर्वार्थसिद्धि विमानमें सबसे स्तोक वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव हैं, क्योंकि, वहां संख्यात जीवोंकी ही उत्पत्ति पायी जाती है। उनसे उक्त शरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे संख्यात राशि स्वरूप हैं।

तिर्यंचोंमें औदारिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है, क्योंकि, उनका काल समान है। वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे अपनी ओघराशिको आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र अपने उपक्रमणकालसे खण्डित करनेपर प्राप्त हुए एक भाग प्रमाण हैं। इनसे वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे अन्तर्मुहूर्तमें संचित हुए हैं। इनसे उनकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं, क्योंकि, मूल शरीरमें प्रवेश न कर मरणको प्राप्त हुए जीवोंकी अपेक्षा यह संख्या विशेष अधिक ही प्राप्त होती है। तैजस और कार्मणशरीरके आश्रित अल्पबहुत्व नहीं हैं, क्योंकि, यहां उनका संघातन-परिशातनकृति रूप एक ही पद है।

.....................

१ प्रतिषु 'तेजा कम्मइय०' इति पाठः।

**पंचिंदियतिरिक्खतिगम्मि सव्वत्थोवा ओरालियपरिसादणकदी, असंखेज्जघणंगुलमेत्त-सेडिपमाणत्तादो । संघादणकदी असंखेज्जगुणा, सग-सगुवक्कमणकालोवट्टिदसग-सगोघरासिग्गहणादो । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, सगरासिस्स असंखेज्जाणं भागाणं गहणादो । वेउव्वियतिगं तिरिक्खोघं, तत्थ पंचिंदियरासिस्स पाधण्णियादो ।**

**पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेसु सव्वत्थोवा ओरालियसंघादणकदी । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा । कारणं सुगमं ।**

**मणुस्सेसु सव्वत्थोवा ओरालियपरिसादणकदी, संखेज्जत्तादो । संघादणकदी असंखेज्जगुणा, अपज्जत्तेसु उप्पज्जमाणासंखेज्जजीवग्गहणादो । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, सयलमणुस्सजीवग्गहणादो । सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी, संखेज्जत्तादो । परिसादणकदी संखेज्जगुणा, अन्तोमुहुत्तसंचिदत्तादो । संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया मूलसरीरमपविस्सिय मदजीवेहि । सव्वत्थोवा आहारयसंघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संघादण -**

.......................

पंचेन्द्रिय तिर्यंच आदिक तीनमें औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे असंख्यात घनांगुल मात्र जगश्रेणियोके बराबर हैं । इनसे उसकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, अपने अपने उपक्रमणकालसे अपवर्तित अपनी अपनी ओघराशिका यहां ग्रहण है । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, यहां अपनी राशिके असंख्यात बहुभागोंका ग्रहण है । वैक्रियिकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा तिर्यंच ओघके समान है, क्योंकि, उनमें पंचेन्द्रिय राशिकी प्रधानता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, इसका कारण सुगम है ।

मनुष्योंमें औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे संख्यात हैं । इनसे उसकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होनेवाले असंख्यात जीवोंका यहां ग्रहण है । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, इनमें समस्त मनुष्योंका ग्रहण है ।

वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे संख्यात हैं । इनसे उसकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे अन्तर्मुहूर्तसे संचित हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव मूल शरीरमें प्रवेश न कर मृत्युप्राप्त जीवोंसे विशेष अधिक हैं ।

आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे उनकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव

**परिसावणकदी विसेसाहिया । कारणं सुगमं । सव्वत्थोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी, संखेज्जत्तादो । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, अपज्जत्तजीवाणं पाधण्णियादो ।**

**मणुसपज्जत्त-मणुसणीसु सव्वत्थोवा ओरालियपरिसादणकदी, विउव्वमाणजीवाणं बहुआणमसंभवादो । संघादणकदी संखेज्जगुणा, मणुसपज्जत्तएसु उप्पज्जमाणजीवाणं बहुत्तुवलंभादो । संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । सुगमं । वेउव्विय-आहारतिण्णिपदाणं मणुसभंगो ।**

**सव्वत्थोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी । संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । सुगमं । मणुसणीसु आहारतिगं णत्थि, अच्चंताभावादो । मणुसअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ।**

**एइंदिय-बादरेइंदियाणं तेसिं पज्जत्ताणं च तिरिक्खभंगो । बादरेइंदियअपज्जत-सव्वसुहुमेइंदिय-सव्वविगलिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्त-सव्वपुढवीकाइय-सव्वआउकाइय-बादरतेउ-**

........................

विशेष अधिक हैं । कारण इसका सुगम है ।

तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे संख्यात हैं । इनसे संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, इनमें अपर्याप्त जीवोंकी प्रधानता है ।

मनुष्य पर्याप्तों और मनुष्यनियोंमें औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, इनमें विक्रिया करनेवाले बहुत जीवोंकी सम्भावना नहीं है । इनसे उसकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, मनुष्य पर्याप्तोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत पाये हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । (कारण) सुगम है ।

वैक्रियिक और आहारकशरीरकके तीन पदोंकी प्ररूपणा सामान्य मनुष्योंके समान है ।

तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, इनसे उनकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । कारण सुगम है । मनुष्यनियोंमें आहारकशरीरके तीनों पद नहीं होते, क्योंकि, इनमें उनका अत्यन्ताभाव है ।

मनुष्य अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है ।

एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्तोंकी प्ररूपणा तिर्यंचोके समान है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सब सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सब विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, सब पृथिवीकायिक, सब जलकायिक, बादर तेजकायिक, वायुकायिक अपर्याप्त, सब सूक्ष्म तेजकायिक,

**काइय-वाउकाइयअपज्जत्त-सव्वसुहुमतेउकाइय-वाउकाइय-सव्ववणप्फदि-सव्वणिगोद-सव्वबादरवणप्फदिपत्तेयसरीर-तसअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो।**

**पंचिंदियदुगम्मि सव्वत्थोवा ओरालिय वेउव्वियपरिसादणकदी, तिरिक्खेसु विउव्वमाणाणं मूलसरीरं पविस्समाणाणं च गहणादो। संघादणकदी असंखेज्जगुणा, तिरिक्खदेवेसुप्पज्जमाणजीवग्गहणादो। संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा। सुगमं। आहारतिगमोघं। तेजा-कम्मइयपदोपदाणं मणुसभंगो।**

**तेउकाइय-वाउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयाणं तेसिं पज्जत्ताणं च पंचिंदियतिरिक्खभंगो। तसदुगस्स पंचिंदियदुगभंगो।**

**पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीसु सव्वत्थोवा ओरालिय वेउव्वियपरिसादणकदी। संघादणपरिसादणकदी असंखेज्जगुणा, देवाणं संखेज्जदिभागत्तादो। सव्वत्थोवा आहारपरिसादणकदी। संघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया। सुगमं।**

**कायजोगीसु ओरालिय-वेउव्विय-आहारतिण्णिपदा ओघं। ओरालियकायजोगीसु** ......................

वायुकायिक, सब वनस्पतिकायिक, सब निगोद, सब बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर और त्रस अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें औदारिक व वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, तिर्यंचोंमें विक्रिया करनेवालों और मूल शरीरमें प्रवेश करनेवालोंका ग्रहण है। इनसे उक्त दोनों शरीरोंकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, यहां तिर्यंचों व देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका ग्रहण है। इनसे उनकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। कारण सुगम है। आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है। तैजस और कार्मणशरीरके दो पदोंकी प्ररूपणा मनुष्योंके समान है।

तेजकायिक, वायुकायिक, बादर तेजकायिक, बादर वायुकायिक तथा उनके पर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके समान है। त्रस और त्रस पर्याप्तोंकी प्ररूपणा क्रमशः पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंके समान है।

पांच मनयोगी और पांच वचनयोगियोंमें औदारिक और वैक्रियिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, इनसे उनकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे देवोंके संख्यातवें भाग हैं। आहारकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। कारण सुगम है।

काययोगियोंमें औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है। औदारिककाययोगियोंमें औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव

**सव्वत्थोवा ओरालियपरिसादकदी। संघादणपरिसादणकदी अणंतगुणा। वेउव्वियतिण्णिपदाणं तिरिक्खभंगो। आहारम्मि णत्थि अप्पाबहुगमेगपदत्तादो। ओरालियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा ओरालियसंघादणकदी, अपज्जत्तएसु एगसमयसंचिदत्तादो। संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, संघादणजीववदिरित्तअसेसापज्जत्तजीवगहणादो।**

**वेउव्विय-आहारकायजोगीसु णत्थि अप्पाबहुगं, एगपदत्तादो। वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा वेउव्वियसंघादणकदी। संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा सुगमं। आहारमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकदी। संघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा। सेसपदाणं णत्थि अप्पाबहुगं, एगत्तादो। कम्मइयकायजोगीसु णत्थि अप्पाबहुगं, एगपदत्तादो।**

**इत्थि-पुरिसवेदाणं अप्पप्पणो पदाणं तसभंगो। णउंसयवेदेसु सगपदा तिरिक्खोघं। अवगदवेदेसु सव्वत्थोवा ओरालिय-तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी। संघादण-परिसाद-**

........................

सबसे स्तोक हैं। इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव अनन्तगुणे हैं। वैक्रियिकशरीरकी तीनों पदोंकी प्ररूपणा तिर्यंचोके समान है। आहारकशरीरके आश्रित अल्पबहुत्व नहीं हैं, क्योंकि, उसका यहां एक ही पद है।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे अपर्याप्तोंमें एक समय मात्रमें संचित हैं। इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, इनमें संघातनकृति युक्त जीवोंको छोडकर शेष समस्त अपर्याप्त जीवोंका ग्रहण है।

वैक्रियिक और आहारककाययोगियोंमें अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, वे एक एक पदसे सहित हैं। वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं। यह सुगम है। आहारकमिश्रकाययोगियोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं। शेष पदोंके अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, वे एक एक पद हैं। कार्मणकाययोगियोंमें अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, उनमें एक ही पद है।

स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंमें अपने अपने पदोंकी प्ररूपणा त्रस जीवोंके समान है। नपुंसकवेदियोंमें अपने पदोंकी प्ररूपणा तिर्यंच ओघके समान है। अपगतवेदियोंमें औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं। इनसे

**णकदी संखेज्जगुणा । सुगमं ।**

**कोधादिचदुक्कम्मि सगपदा ओघं । अकसाईणमवगदवेदभंगो । एवं केवलणाणि-केवलदंसणि-जहाक्खादसंजदाणं ।**

**मदि-सुदअण्णाणीसु सगपदा ओघं । एवमसंजद-अभवसिद्धि-मिच्छाइट्ठि-असण्णीणं च वत्तव्वं । विभंगणाणीसु सव्वत्थोवा ओरालियपरिसादणकदी । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, असंखेज्जघणंगुलमेत्तसेढीप पमाणत्तादो । सव्वत्थोवा वेउव्विय-संघादणकदी, देवेसु अपज्जत्तकाले विभंगणाणाभावेण विभंगणाणेण सह विउव्वमाण-तिरिक्ख-मणुस्सग्गहणादो । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, अंतोमुहुत्तसंचि-दत्तादो । संघादण-परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, पहाणीकयदेवरासित्तादो ।**

**आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु सव्वत्थोवा ओरालियसंघादणकदी, संखेज्जत्तादो । परिसादणकदी असंखेज्जगुणा, सम्माइट्ठीसु असंखेज्जाणं तिरिक्खेसु विउव्वमाणा-णमुवलंभादो ।**

......................

उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । यह कथन सुगम है ।

क्रोधादि चार कषाय युक्त जीवोंमें अपने पदोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । अकषायी जीवोंकी प्ररूपणा अपगतवेदियोंके समान है । इसी प्रकार केवलज्ञानी, केवलदर्शनी और यथाख्यातसंयत जीवोंके कहना चाहिये ।

मति व श्रुत अज्ञानियोंमें अपने पद ओघके समान हैं । इसी प्रकार असंयत, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवोंके भी कहना चाहिये । विभंगज्ञानियोंमें औदा-रिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे असंख्यात घनांगुलप्रमाण जगश्रेणियोंके बराबर हैं । वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, देवोंमें अपर्याप्तकालमें विभंगज्ञानका अभाव होनेसे विभंगज्ञानके साथ विक्रिया करनेवाले तिर्यंच और मनुष्योंका यहां ग्रहण है । इनसे उसकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे अन्तर्मुहूर्त कालमें संचित हैं । इनसे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, इनमें देवराशिकी प्रधानता है ।

आभिनिबोधिक, श्रुत और अवधिज्ञानी जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे संख्यात हैं । इनसे उसकी परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, सम्यग्दृष्टियोंमें असंख्यात जीव तिर्यंचोंमें विक्रिया करने-